[६]

मुल्ला कहहु निआउ खुदाई ।
इहि बिधि जीव का भरमु न जाई ॥ टेका ॥
सरजीव आनै देह बिनासै माटी बिसमिल कीआ ।
जोती सरूपी हाथि न आया कहौ हलाल क्यूं कीआ ॥
वेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न बिचारै ।
सभ घटि एका एको करि लेखै भै दूजा करि मारै ॥
कुकड़ी मारै बकरी मारै हक्क हक्क करि बोलै ।
सबै जीव सांई को प्यारे उबरहुगे किस बोलै ॥
दिल नापाक पाक नहि चीन्हा तिसका मरमु न जाना ।
कहै कबीर भिसति छिटकाई दोजग ही मन माना ।

जोगी कै जोगिनि होइ बैठी राजा कै घरि रानी।
काहू कै हीरा होइ बैठी काहू कै कौड़ी कांनी ॥
भगत कै भगतिनि होइ बैठी तुरकां कै तुरकानी।
दास कबीर साहेब का बंदा जाकै हाथि बिकांनी ॥

[४]

साधो करता करम तैं न्यारा।
आवै न जाय मरै नहिं जनमैं ताका करौ बिचारा ॥
जाकै धरनि गगन है सहसो ताको सकल पसारा।
नाद बिन्द तैं रहित है सोई खसम हमारा ॥
राम को पिता जो जसरथ कहिये आ जाया।
जसरथ पिता राम को दादा कहौ कहां तैं आया ॥
राधा रुकमिनि क्रिसन की रानी क्रिसन होआ का मीरा।
सोरह सहस गोपी उन भोगी वह भयौ काम को कीरा॥
बसुदेव पिता देवकी माता नंद महर घरि आया।
कहैं कबीर करता नहिं होइ जो करमा हाथि बिकाया॥

[५]

पंडित बाद बदै सो झूठा।
राम कहे दुनिया गति पावै खांड कहे मुख मीठा ॥
पावक कहे पांव जे डाझै जल कहे त्रिखा बुझाई।
भोजन कहे भूख जे भाजै तौ सब कोइ तिर जाई॥
नर कै संगि सुआ हरि बोलै हरि परताप न जानै,
जो कबहूँ उड़ि जाइ जंगल मैं बहुरि सुरति नहिं आनै ॥
सांची प्रीति बिखै माया सौं हरि भगतन सौं हांसी।
कहैं कबीर प्रेम नहिं उपजै बांधे जमपुर जासी ॥

(Date/16/08/2017) कबीर (पद) (2

[1]

दुलहनिया छांड़ि दे मन बौरा ।
अब तो जरें मरें बनि आवे लीन्हों हाथ सिंधौरा ॥
होइ निसंक मगन होइ नाचौं, लोभ मोह भ्रम छाड़ौं ।
सूरा कहा मरन तें डरपे सती न संचें भांड़ें ॥
लोक वेद कुल की मरजादा इहै गले मैं फांसी ।
आधा चलि करि पाछे फिरिहौ होइ जगत मैं हांसी ॥
यह संसार सकल है मैला राम कहें ते सूचा ।
कहै कबीर नाउं नहि छांडौं गिरत परत चढ़ि ऊंचा ।

[2]

पलति कत टेढ़े टेढ़े टेढ़े ।
नऊ दुआर नरक धरि मूंदे दुरगंधि ही को बेढ़े ॥
जो जारें तौ होइ भसम तन गाड़े क्रिमि कीट खाई ।
सूकर स्वान काग को भखिखन तामैं कहा भलाई ॥
फूटे नैन हिरदै नहिं सूझै मति एकौ नहिं जानी ।
काम क्रोध तिसना के मारे बुड़ि मुएहु बिनु पांनी ॥
राम न जपहु कवन भ्रम भूले तुम तें काल न दूरी
कोटि जतन करि यहु तन राखहु अंत अवस्था धूरी ॥
बालू के घरवा महिं बैसे चेतत नहीं अयांना ।
कहै कबीर एक राम भजे बिनु बुडे बहुत सियांना ॥

[3]

माया महा ठगिनि हम जानी ।
तिरगुन फांसि लिए कर डोलै बोलै मधुरी बानी ॥
केसव के कमला होई बैठी सिव के भवन भवानी ॥
पंडा की मूरति होइ बैठी तीरथ हू मैं पांनी ॥

12/. जिंहखि न कोई सिंहखि तिसहिं तूं जिस तू तिस सब
दरिगह तेरी सांइयां मेटि न सक्को कोइ ॥१२॥

13/. अगम अगोचर गमि नहीं जहां जगमगै जोति।
तहां कबीरा बंदगी जहां पाप पुन्नि नहिं छोति ॥१३॥

14/. पंजरि प्रेम प्रकासिया जागी जोति अनंत।
संसै खूटा सुख भया मिला पियारा कंत ॥१४॥

15/. गांव न जानों गांव का बिनु जानें कहं जाउं।
चलते चलते जुग गया पाव कोस पर गांउ ॥१५॥

16/. हम बासी उस देश के जहां जाति पांति कुल नांहि
सबद मिलावा है रहा देह मिलावा नांहि ॥१६॥

17/. हौं चितवत हौं तोहि कौं तू चितवत कछु और।
कहै कबीर कैसे बनै एका चित दुइ ठौर ॥१७॥

18/. कबीर एको जानिया तौ जाना सब जाण।
जे वो एका न जानियां तौ सबही जाण अजाण ॥१८॥

19/. कबीर सोई सूरिवां मन सौं माडै जूझ।
पंच पियादै पकरि कै दूरि करै सब दूजि ॥१९॥

20/. कायर बहुत पमाहहीं बहकि न बोलै सूर।
काम परे ही जानिए किसके मुख पीर नूर ॥२०॥

(Date 16/08/2017)

(B... ...ih)

कबीर साखी (1–20)

1/. राम नाम कै पटंतरै देबे कौं कछु नांहि ।
क्या लै गुर संतोखिए हौंस रही मन मांहि ॥ १ ॥

2/. ग्यानप्रकासी गुर मिला सो जिनि बीसरि जाई ।
जब गोविन्द क्रिपा करी तब गुर मिलिया आइ ॥ २ ॥

3/. हंसि हंसि कंत न पाइये जिन पाया तिन रोइ ।
हांसी खेलां पिउ मिलै तौ नहीं दुहागिनि कोइ ॥ ३ ॥

4/. जैसे माया मन रमै यों जे राम रमाइ ।
तौ तारामंडल बेधि कै सो अमरापुर जाइ ॥ ४ ॥

5/. कबीर जिन कछु जानिया तिन्ह सुखनींद बिहाइ ।
मैं रे अबुझी पूरी परी बलाइ ॥ ५ ॥

6/. सब घटि मेरा सांइयां सूनी सेज न कोइ ।
भाग तिनहु का है सखी जिहिं घटि परगट होइ ॥ ६ ॥

7/. कबीर सब जग ढूंढिया बुरा न मिलिया कोइ ।
कबिरा सब काहू बुरा कबीरै बुरा न होइ ॥ ७ ॥

8/. कस्तूरी कुंडलि बसै म्रिग ढूंढै बन मांहि ।
ऐसे घटि घटि राम है दुनिया देखै नांहि ॥ ८ ॥

9/. ऐसा कोई ना मिला समझै सैन सुजान ।
ढोल बजंता न सुनै सुरति बिहूना कान ॥ ९ ॥

10/. हम घर जारा अपना लिया मुराड़ा हाथि ।
अब घर जालौं तास का जो चलै हमारे साथि ॥ १० ॥

11/. कबीर करनी क्या करै जो राम न करै सहाइ ।
जिहिं जिहिं डारि पग धरौं सोई नइ नइ जाइ ॥ ११ ॥